Part - 2

प्रश्न 8. चिन्तन - प्रवाहमे संकलित ‘ जीवन - दर्शन ’ कविताक भावार्थ लिखू ।

उतर - कवि रूप मे पहिला रचना संकलन थिक डॉ0 धीरेन्द्र नाथ मिश्रक चिन्तन - प्रवाहमे ’ ।एहिमे संकलित समस्त रचना भिन्न- भिन्न भाव- भुमिका अछि । 1975 ई0 सँ 2004 ई0 धरिक छिट पुट रचना जे पत्र- पत्रिका आकाशवाणी सँ प्रकाशित - प्रसारित अछि। एहि पैध अन्तरालमे देस, काल, प्ररिश्थितिक भिन्नतासँ रचनामे सेहो निरंतर परिवर्तन होइत

गेल । एक प्रौढ कविक रूपमे चिन्तन - प्रवाहमे समस्त रचना अछि ।

जीवन - दर्शन , विधिक - विधानक

हाथ न्हि तिल मात्र अप्पन

जाहि जीवन जी रहल छि।

अहं मे सब रहए सदिखन

दुख दर्द गरले पी रहल छी।

मनुक्खक जीवनक डोर त' परमात्मक हाथमे अछि , हुनके कृपासँ जीअब आ हुनके कृपासँ मरब , ई सभकेँ बुझल छैक । तथापि अहंकारमे

एक - दोसरके दु:ख दर्द बाँटि रहल अछि । लोक कंकर पत्थर जोरिकेँ महल बनयबाक लेल अप्स्यांत अछि। मुदा दिन-राति अपने आंखिसँ देखैत छथि जे अरबपति , खरबपति मिड़ला पर खालि जा रह छथि ।

सभ किछु जनितो जे ई जीवन नश्वर अछि तथापि तृष्णमे विवेकहीन काज सतत् करैत रहैत छथि । इच्छा अनन्त अछि ओहि इच्छाक पूर्तिमे लागल रहब त' माया जाल थिक । मायाक बन्धनमे पड़ि जीवनक वास्तविक उधेश्य्केँ प्राप्त करबासँ बंचित रहि जाइत अछि ।